INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

HANDWRITTEN NOTES

LATEST EDITION

राजस्थान ग्राम विकास अधिकारी

(VDO) (ग्राम सेवक)

मुख्य परीक्षा हेतु

RAJASTHAN SUBORDINATE AND MINISTERIAL SERVICE SELECTION BOARD (RSMSSB)

भाग-5 इतिहास और संस्कृति (राजस्थान + भारत)

Whatsapp- https://wa.link/0e0rrx 1 website- https://bit.ly/vdo-mains-notes

भारतीय राजनैतिक व सांस्कृतिक इतिहास के लैंडमार्क, मुख्य स्मारक

साहित्यिक कार्य

1. इतिहास के स्त्रोत
2. सिन्धु सभ्यता का इतिहास एवं लैंडमार्क
3. वैदिक सभ्यता
4. धार्मिक आंदोलन
5. छठी शताब्दी ई.पू. का इतिहास
6. मौर्य काल एवं मौर्योत्तर काल
7. गुप्त काल एवं गुप्तोत्तर काल
8. कुषाण एवं सातवाहन वंश

मध्यकालीन भारत

1. भारत पर विदेशी आक्रमण
2. दिल्ली सल्तनत
3. मध्य कालीन भारत में धार्मिक आंदोलन
4. बहमनी और विजयनगर साम्राज्य

5. मुग़ल काल (1526-1707)

आधुनिक भारत का इतिहास

1. यूरोपीय व्यापार का प्रारम्भ
2. गवर्नर जनरल
3. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन
4. भारतीय पुनर्जागरण
5. राष्ट्रीय एकता व स्वतंत्रता के लिए संघर्ष
6. गाँधी युग और असहयोग आंदोलन
7. क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक

इतिहास और संस्कृति (राजस्थान)

1. राजस्थान इतिहास के स्त्रोत
2. राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं
3. गुर्जर प्रतिहार वंश
4. मेवाड़ का इतिहास
5. मारवाड़ का इतिहास

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

6. राजस्थान के वंश

7. मुग़ल साम्राज्य और राजस्थान

8. मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था

9. स्वतंत्रता आंदोलन व राजनैतिक जाग्रति

10. राजस्थान में 1857 की क्रांति

11. राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आंदोलन

12. राजस्थान में प्रजामंडल

13. राजनैतिक एकता

राजस्थान की संस्कृति

1. बोलियाँ एवं साहित्य

2. संगीत, I (लोक गीत)

3. लोक नृत्य

4. लोक नाट्य

5. धार्मिक विश्वास संप्रदाय, संत

6. राजस्थान के कवि

7. वीर पुरुष

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

8. लोक देवता व लोक देवियाँ

9. हस्तकला

10. मेले एवं त्यौंहार

11. लोक परम्परा एवं रीति रिवाज

12. पोषक / वस्त्र एवं आभूषण

13. विशेषता आदिवासी व जनजाति के संदर्भ में

FREE SAMPLE
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट -

प्रिय छात्रों, Infusion Notes के राजस्थान ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा) के sample notes आपको पीडीऍफ़ format में "फ्री" में दिए जा रहे हैं और complete Notes आपको Infusion Notes की website या (Amazon/Flipkart) से खरीदने होंगे जो कि आपको hardcopy यानि बुक फॉर्मेट में ही मिलेंगें, या नोट्स खरीदने के लिए हमारे नंबरों पर सीधे कॉल करें (8233195718, 9694804063, 8504091672)। किसी भी व्यक्ति को sample पीडीऍफ़ या complete Course की पीडीऍफ़ के लिए भुगतान नहीं करना है। अगर कोई ऐसा कर रहा है तो उसकी शिकायत हमारे Phone नंबर 8233195718, 0141-4045784 पर करें, उसके खिलाफ क़ानूनी कार्यवाई की जाएगी।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

भारतीय राजनैतिक व सांस्कृतिक इतिहास के लैंडमार्क, मुख्य स्मारक साहित्यिक कार्य

अध्याय – I

इतिहास के स्त्रोत

प्राचीन इतिहास के स्त्रोत

भारत के इतिहास के सम्बन्ध के अनेकों स्त्रोत उपलब्ध हैं, कुछ स्त्रोत काफी विश्वसनीय व वैज्ञानिक हैं, अन्य मान्यताओं पर आधारित हैं।प्राचीन भारत के इतिहास के सम्बन्ध में जानकारी के मुख्य स्त्रोतों को 3 भागों में बांटा जा सकता है, यह 3 स्त्रोत निम्नलिखित हैं :

1. पुरातात्विक स्त्रोत
2. साहित्यिक स्त्रोत
3. विदेशी स्त्रोत

(i) पुरातात्विक स्त्रोत (Archaeological Sources)

पुरातात्विक स्त्रोत का सम्बन्ध प्राचीन अभिलेखों, सिक्कों, स्मारकों, भवनों, मूर्तियों तथा चित्रकला से है, यह साधन काफी विश्वसनीय हैं। इन स्त्रोतों की सहायता से प्राचीन काल की विभिन्न मानवीय गतिविधियों की काफी सटीक जानकारी मिलती है। इन स्त्रोतों से किसी समय विशेष में मौजूद लोगों के रहन-सहन, कला, जीवन शैली व अर्थव्यवस्था इत्यादि का ज्ञान होता है। इनमे से अधिकतर स्त्रोतों का वैज्ञानिक सत्यापन किया जा सकता है।

अभिलेख (Inscriptions)

- भारतीय इतिहास के बारे में प्राचीन काल के कई शासकों के अभिलेखों से काफी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है। यह अभिलेख पत्थर, स्तम्भ, धातु की पट्टी तथा मिट्टी की वस्तुओं पर उकेरे हुए प्राप्त हुए हैं। इन प्राचीन अभिलेखों के अध्ययन को पुरालेखशास्त्र कहा जाता है, जबकि इन अभिलेखों की लिपि के अध्ययन को पुरालिपिशास्त्र कहा जाता है। जबकि अभिलेखों के अधययन को Epigraphy कहा जाता है। अभिलेखों का उपयोग शासकों द्वारा आमतौर पर अपने आदेशों का प्रसार करने के लिए करते थे।

- यह अभिलेख आमतौर पर ठोस सतह वाले स्थानों अथवा वस्तुओं पर मिलते हैं, लम्बे समय तक अमिट्य बनाने के लिए इन्हें ठोस सतहों पर लिखा जाता है। इस प्रकार के अभिलेख मंदिर की दीवारों, स्तंभों, स्तूपों, मुहरों तथा ताम्रपत्रों इत्यादि पर प्राप्त होते हैं। यह अभिलेख अलग-अलग भाषाओँ में लिखे गए हैं, इनमे से प्रमुख भाषाएँ संस्कृत, पाली और संस्कृत हैं, दक्षिण भारत की भी कई भाषाओँ में काफी अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

- भारत के इतिहास के सम्बन्ध में सबसे प्राचीन अभिलेख सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त हुए हैं, यह अभिलेख औसतन 2500 ईसा पूर्व के समयकाल के हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि अभी तक डिकोड न किया जाने के कारण अभी तक इन अभिलेखों का सार अभी तक ज्ञात नहीं हो सका है। सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि में प्रतीक चिन्हों का उपयोग किया गया है, और अभी तक इस लिपि का डिकोड नहीं किया जा सका है।

- पश्चिम एशिया अथवा एशिया माइनर के बोंगज़कोई नामक स्थान से भी काफी प्राचीन अभिलेख प्राप्त हुए हैं, हालांकि यह अभिलेख सिन्धु घाटी सभ्यता के जितने पुराने नहीं है।बोंगज़कोई से प्राप्त अभिलेख लगभग 1400 ईसा पूर्व के समयकाल के हैं। इन अभिलेखों की विशेष बात यह है कि इन अभिलेखों में वैदिक देवताओं इंद्र, मित्र, वरुण तथा नासत्य का उल्लेख मिलता है।

- ईरान से भी प्राचीन अभिलेख नक्श-ए-रुस्तम प्राप्त हुए हैं, इन अभिलेखों में प्राचीन काल में भारत और पश्चिम एशिया के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है। भारत के प्राचीन इतिहास के अधययन में यह अभिलेख अति महत्वपूर्ण हैं, इनसे प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था, व्यापार इत्यादि के सम्बन्ध में पता चलता है।

- ब्रिटिश पुरातत्वविद जेम्स प्रिन्सेप ने सबसे पहले 1837 में अशोक के अभिलेखों को डिकोड किया। यह अभिलेख सम्राट अशोक द्वारा ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण करवाए गए थे। अभिलेख उत्कीर्ण करवाने का मुख्य उद्देश्य शासकों द्वारा अपने आदेश को जन-सामान्य तक पहुँचाने के लिए किया जाता था।

सम्राट अशोक के अतिरिक्त.....

FREE SAMPLE

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)

FREE SAMPLE

U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 I[st] शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (I[st] शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

(ii) साहित्यिक स्त्रोत

भारत के इतिहास में के सन्दर्भ में सर्वाधिक स्त्रोत साहित्यिक स्त्रोत हैं। प्राचीन काल में पुस्तकें हाथ से लिखी जाती थी, हाथ से लिखी गयी इन पुस्तकों को पांडुलिपि कहा जाता हैं। पांडुलिपियों को ताड़पत्रों तथा भोजपत्रों पर लिखा जाता था। इस प्राचीन साहित्य को 2 भागों में बांटा जा सकता हैं :-

a) धार्मिक साहित्य

भारत में प्राचीन काल में तीन मुख्य धर्मो हिन्दू, बौद्ध तथा जैन धर्म का उदय हुआ। इन धर्मो के विस्तार के साथ-साथ विभिन्न दार्शनिकों, विद्वानों तथा धर्माचार्यो द्वारा अनेक धार्मिक पुस्तकों की रचना की गयी।इन रचनाओं में प्राचीन भारत के समाज, संस्कृति, स्थापत्य, लोगों की जीवनशैली व अर्थव्यवस्था इत्यादि के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं। धार्मिक साहित्य की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं:

i. हिन्दू धर्म से सम्बंधित साहित्य

हिन्दू धर्म विश्व का सबसे प्राचीनतम धर्मो में से एक हैं। प्राचीन भारत में इसका उदय होने से प्राचीन भारतीय समाज की विस्तृत जानकारी हिन्दू धर्म से सम्बंधित पुस्तकों से मिलती हैं।हिन्दू धर्म में अनेक ग्रन्थ, पुस्तकें तथा महाकाव्य इत्यादि की रचना की गयी हैं, इनमे प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार से हैं – वेद, वेदांग, उपनिषद, स्मृतियाँ, पुराण, रामायण एवं महाभारत। इनमे ऋग्वेद सबसे प्राचीन हैं। इन धार्मिक ग्रंथों से प्राचीन भारत की राजव्यवस्था, धर्म, संस्कृति तथा सामाजिक व्यवस्था की विस्तृत जानकारी मिलती हैं।

वेद

- हिन्दू धर्म में वेद अति महत्वपूर्ण साहित्य हैं, वेद की कुल संख्या चार हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद ५ वेद हैं।

- *ऋग्वेद विश्व की सबसे प्राचीन पुस्तकों में से एक है, इसकी रचना लगभग 1500-1000 ईसा पूर्व के समयकाल में की गयी।*
- *जबकि यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद की रचना लगभग 1000-500 ईसा पूर्व के समयकाल में की गयी। ऋग्वेद में देवताओं की स्तुतियाँ हैं। यजुर्वेद का सम्बन्ध यज्ञ के नियमों तथा अन्य धार्मिक विधि-विधानों से है।*
- *सामवेद का सम्बन्ध यज्ञ के मंत्रो से है। जबकि अथर्ववेद में धर्म, औषधि तथा रोग निवारण इत्यादि के बारे में लिखा गया है।*

ब्राह्मण

- *ब्राह्मणों को वेदों के साथ सलंगन किया गया है, ब्राह्मण वेदों के ही भाग हैं।प्रत्येक वेद के ब्राह्मण अलग हैं।*
- *यह ब्राह्मण ग्रंथ गद्य शैली में हैं, इनमे विभिन्न विधि-विधानों तथा कर्मकांड का विस्तृत वर्णन है।*
- *ब्राह्मणों में वेदों का सार सरल शब्दों में दिया गया है, इन ब्राह्मण ग्रंथों की रचना विभिन्न ऋषियों द्वारा की गयी। ऐतरेय तथा शतपथ ब्राह्मण ग्रंथो के उदहारण हैं।*

आरण्यक

आरण्यक शब्द 'अरण्य' से से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ "वन" होता है। आरण्यक वे धर्म ग्रन्थ हैं जिन्हें वन में ऋषियों द्वारा लिखा गया। आरण्यक ग्रंथों में अध्यात्म तथा दर्शन का वर्णन है, इनकी विषयवस्तु काफी गूढ़ है। आरण्यक की रचना ग्रंथो के बाद हुई और यह अलग-अलग वेदों के साथ संलग्न है, परन्तु अथर्ववेद को किसी भी आरण्यक से नहीं जोड़ा गया है।

वेदांग

जैसा की नाम से स्पष्ट है, वेदांग, वेदों के अंग हैं। वेदांगों में वेद के गूढ़ ज्ञान को सरल भाषा में लिखा गया है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद व ज्योतिष कुल 6 वेदांग.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

अध्याय – 2

सिन्धु सभ्यता का इतिहास एवं लैंडमार्क

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया ।
- सबसे पहले 1921 में हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।
- सिन्धु घाटी सभ्यता को अन्य नामों से भी जानतें हैं ।
- सैंधव सभ्यता - जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया।
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा।
- सरस्वती सभ्यता भी कहा गया ।
- मेलूहा सभ्यता भी कहा गया ।
- कांस्यकालीन सभ्यता भी कहा गया ।
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेंसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लार्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों की खोज की।

हड़प्पा नामक पुरास्थल सिन्धु घाटी सभ्यता से.....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक* ***सैंपल मात्र*** *है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

- **हड़प्पा**

रावी नदी के किनारे पर स्थित है।

दयाराम साहनी ने खोजा। खोज- वर्ष 1921 में

उत्खनन-

- 1921-24 व 1924-25 में दयाराम साहनी द्वारा।
- 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
- 1946 में मार्टीमर ह्वीलर द्वारा
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- पिगट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को इस सभ्यता की जुड़वा राजधानी कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 km.
- 1826 में चार्ल्स मैसन् ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है।
- हड़प्पा से प्राप्त कब्रिस्तान को R-37 नाम दिया।
- भारत में चाँदी की उपलब्धता के प्राचीनतम साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता से मिलते हैं।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया
- हड़प्पा के अवशेषों में दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवास गृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति महत्त्वपूर्ण हैं।

मोहनजोदड़ो

- सिन्धु नदी के तट पर मोहनजोदड़ो की खोज सन् 1922 में राखलदास बनर्जी ने की थी।

उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)

- मार्शल
- जे.एच. मैके

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

➢ *जे.एफ. डेल्स*

- *मोहनजोदड़ो का नगर कच्ची ईटों के चबूतरे पर निर्मित था।*
- *मोहनजोदड़ो सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ - मृतकों का टीला मोहनजोदड़ो को स्तूपों का शहर भी कहा जाता है।*
- *बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।*
- *यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले चाँदी के दो सिक्के मिले हैं ।*
- *वस्त्र निर्माण का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेंहरगढ़*
- *सुमेंरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।*

मोहनजोदड़ो की सबसे.....

***नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/*

FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

अध्याय – 5

मुग़ल काल (1526-1707)

बाबर से औरंगजेब तक

बाबर (1526 ई.- 1530)

- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया।
- लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की- दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलट कर दिया।
- बाबर ने मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी ।
- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था, अधिकतर मुगल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे मुगल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।
- बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज़्बेकिस्तान का हिस्सा है।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था ।
- पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ. जिसमें बाबर की जीत हुई
- खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई ।

FREE SAMPLE

- चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई में मेंदनी राय और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
- घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई में अफगानो और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।

नोट -पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुलुगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया था।

- उस्ताद अली एवं मुस्तफा बाबर के दो प्रसिद्ध निशानेबाज थे। जिसने पानीपत के प्रथम युद्ध में भाग लिया था।
- पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर का भारत पर उसके द्वारा किया गया पांचवा आक्रमण था, जिसमें उसने इब्राहिम लोदी को हराकर विजय प्राप्त की थी और मुग़ल साम्राज्य की स्थापना की थी।
- बाबर की विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।
- पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिये'उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।
- पानीपत के युद्ध में विजय की खुशी में बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक चाँदी का सिक्का दान में दिया था। अपनी इसी उदारता के कारण बाबर को 'कलन्दर' भी कहा जाता था।
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों को सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर अपने आपको 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।
- पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था।

खानवा विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण की.....

FREE SAMPLE

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

FREE SAMPLE

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)

राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

FREE SAMPLE

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

हुमायूं (1530 ई-1556 ई.)

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूं मुगल वंश के शासन पर बैठा ।
- हुमायूं ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।
- हुमायूं के सबसे बड़े शत्रु अफगान थे, क्योंकि वे बाबर के समय से ही मुगलों को भारत से बाहर खदेड़ने के लिए प्रयत्नशील थे।
- हुमायूं का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी अफगान नेता शेर खाँ था, जिसे शेरशाह शूरी भी कहा जाता है।
- हुमायूं का अफगानों से पहला मुकाबला 1532 ई. में दौहरिया'नामक स्थान पर हुआ। इसमें अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। इस संघर्ष में हुमायूं सफल रहा।
- 1532 में हुमायूं ने शेर खाँ के चुनार किले पर घेरा डाला। इस अभियान में शेर खाँ ने हुमायूं की अधीनता स्वीकार कर ली
- 1532 ई में हुमायूं ने दिल्ली में दीन पनाह'नामक नगर की स्थापना की।
- चारबाग पद्धति का प्रयोग पहली बार हुमायूँ के मकबरे में हुआ जबकि भारत में पहला बाग युक्त मकबरा सिकंदर लोदी का था ।
- हुमायूँ के मकबरे को ताजमहल का पूर्वगामी माना जाता है ।
- स्वर्ण सिक्का जारी करने वाला प्रथम मुगल शासक हुमायूँ था ।
- हुमायूँ ने 1535 ई में ही उसने बहादुर शाह को हराकर गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की।
- शेर खाँ की बढ़ ती शक्ति को दबाने के लिए हुमायूं ने 1538 ई में चुनारगढ़ के किले पर दूसरा घेरा डालकर उसे अपनेअधीन कर लिया।
- 1538 ई में हुमायूं ने बंगाल को जीतकर मुग़ल शासक के अधीन कर लिया। बंगाल विजय से लौटते समय 26 जून,1539 को चौसा के युद्ध में शेर खाँ ने हुमायूं को बुरी तरह पराजित किया।

  शेर खाँ ने 17 मई, 1540 को बिलग्राम के युद्ध में पुनः हुमायूं को पराजित कर.....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट *– प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक* ***सैंपल मात्र*** *है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 6

गाँधी युग और असहयोग आंदोलन

- 1916 ई. के लखनऊ अधिवेशन में एनीबेसेंट के सहयोग से कांग्रेस के उदारवादी और उग्रवादी एक हो गए।
- भारत में होमरूल आंदोलन एनीबेसेंट ने आरम्भ किया।
- महात्मा गाँधी ने पहली बार भूख हड़ताल अहमदाबाद मिल मजदूरों के हड़ताल (1918 ई.) के समर्थन में की थी।
- गाँधी जी ने 1918 ई. में गुजरात में कर नहीं आंदोलन चलाया। गाँधी जी ने इस कानून के विरुद्ध 6 अप्रैल 1919 ई. को देशव्यापी हड़ताल करवायी।
- दक्षिणी अफ्रीका से भारत आने के बाद गाँधी जी अपना प्रथम सत्याग्रह चम्पारण (बिहार) में किया।
- 1920 ई. के कांग्रेस के विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता लाला लाजपत राय नी की थी जिसमें असहयोग के प्रस्ताव को रखा गया था।
- रौलेट एक्ट को बिना वकील ,बिना अपील, बिना दलील के कानून के नाम से जाना जाता है।
- लॉर्ड चेम्सफोर्ड के शासन काल में गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया था।
- भारत में असहयोग आंदोलन 1920 में शुरू हुआ था।
- रौलेट एक्ट पारित हुआ उस समय भारत के वायसराय लॉर्ड चेम्सफोर्ड थे।
- अनटू दिस लास्ट नामक पुस्तक के लेखक जॉन रस्किन हैं।
- गदर पार्टी के संस्थापक लाला हरदयाल थे।
- 5 फरवरी 1922 ई. को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिलें के चौरी चौरा नामक स्थान पर असहयोग आंदोलन कारियों ने क्रोध में आकर थाने में आग लगा दी। जिससे एक थानेदार एवं 21 सिपाहियों की मृत्यु हो गयी। इस घटना से दुःखी होकर गाँधी जी 11 फरवरी 1922 ई. को असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया।

FREE SAMPLE

- स्वामी श्रद्धानन्द ने रौलेट एक्ट के विरोध में लगान न देने के लिए आंदोलन चलने का विरोध किया।
- उड़ीसा के अकाल काल को ब्रिटिश काल के दौरान पड़े अकाल को प्रकोप का समुद्र कहा जाता है।
- 13 अप्रैल 1919 ई. को अमृतसर में जलियाँवाला बाग हत्या कांड हुआ। इस जनसभा में जनरल डायर ने अन्धाधुन्ध गोलियां चलवाई। इस हत्या कांड ने लगभग 1000 लोग मारे गए। इस हत्या कांड में हंसराज नामक भारतीय ने डायर को सहयोग दिया था।
- इस हत्या कांड के विरोध में महात्मा गाँधी ने केसर – ए - हिन्द की उपाधि, जमना लाल बजाज ने राय बहादुर , रवींद्रनाथ टैगोर ने सर ,(नाईटहुड) की उपाधि वापस लौटा दी ।
- जलियाँवाला बाग हत्या कांड की जाच के लिए सरकार ने अक्टूबर , 1919 ई. में लॉर्ड हंटर की अध्यक्षता में एक कमेंटी का गठन किया। इसमें पांच अंग्रेज एवं तीन भारतीय (सर चिमन लाल सीता लवाड ,साहबजादा सुल्तान अहमद , एवं जगत नारायण)सदस्य थे।
- जनरल डायर की हत्या उधमसिंह ने लंदन में की थी।
- जलियाँवाला बाग कभी जल्ली नामक व्यक्ति की सम्पति थी।
- रौलेट एक्ट को काला कानून तथा आतंकवादी और अपराध कानून कहा गया है।

रौलेट एक्ट को 18 मार्च 1919 को.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी

ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा) की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE

अध्याय – 7

क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक

- सावरकर बंधुओं ने 1904 में मित्र मेला एवं 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।
- महाराष्ट्र में पहली क्रांतिकारी घटना 1897 में प्लेग कमिश्नर रैण्ड की गोली मारकर की गयी हत्या थी।
- वस्तुतः चापेकर बंधुओं ने बालकृष्ण एवं दामोदर चापेकर तिलक के पत्र'केसरी' में छपे लेख से प्रेरित होकर यह कार्य किया था।
- बंगाल में 1902 में अनुशीलन समिति की स्थापना हुई जिसमें 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'जतिन नॉथ' की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- बंगाल में 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'उपेन्द्रनाथ दत्त' ने 'युगांतर' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया।
- 1930 में बंगाल में विनय, बादल एवं दिनेश नामक क्रांतिकारियों ने अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी। इसी तरह सूर्यसेन)मास्टर दा (ने चटगांव शस्त्रागार पर नियंत्रण स्थापित किया ।
- भगत सिंह ने 1925 में 'भारत नौजवान सभा' की स्थापना की जिसने भारतीयों को समाजवादी विचारधारा के माध्यम से क्रान्ति की ओर प्रेरित किया।
- पंजाब में क्रांतिकारी विचारधारा के प्रसार में अजीत सिंह की भूमिका महत्वपूर्ण थी। जब अजीत सिंह को पंजाब से निर्वासित किया गया तो वह फ्रांस पहुंचकर क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करने लगे।
- दिल्ली में 1912 में वायसराय लार्ड हार्डिंग के काफिले पर बम फेंका गया। इस घटना में रास बिहारी बोस की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- संयुक्त प्रांत में 9 अगस्त 1925 में लखनऊ के पास काकोरी ट्रेन डकैती की गयी और सरकारी खजाने को लूटा गया। इस काकोरी षड्यंत्र मुकदमें के तहत राम प्रसाद बिस्मिल,

रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिडी एवं अशफाक उल्ला खां को फांसी दे दी गयी। चन्द्रशेखर आजाद भी इस घटना में, शामिल थे किंतु वे फरार होने में सफल रहे ।

- 1928 में दिल्ली में फिरोजशाह कोटला मैदान में क्रांतिकारियों की बैठक हुई जिसमें भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारी शामिल थे। इस बैठक में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन)HRA) का नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन CHSRAJ कर दिया गया।
- रास बिहारी घोष –उदारवादी
- रास बिहारी बोस- क्रांतिकारी
- स्वदेशी आंदोलन में किसानों की भागीदारी नहीं थी।
- ब्रह्म समाज -1828
- आर्य समाज 1875
- रामकृष्ण मिशन -1897

- ***विदेश में प्रसार***
- ***लंदन*** में 1905 में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने 'इंडिया होमरुल सोसाइटी' की स्थापना की जिसका लक्ष्य भारत के लिए स्वराज की प्राप्ति करना था। इसकी स्थापना ब्रिटिश समाजवादी नेता 'हीडमैन' के सुझाव पर की गई। हैं। इसके उपाध्यक्ष अब्दुल्ला सुहरावर्दी थे।

श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लंदन में 'इंडिया हाउस' की स्थापना की जो क्रांतिकारियों का प्रमुख केन्द्र बना। यह विदेशों में रह रहे भारतीयों को एकजुट कर क्रांतिकारी विचारधारा के प्रसार में अपनी भूमिका निभाता था। सरकारी दमन के कारण श्याम जी कृष्ण वर्मा को लंदन छोड़ना.....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट *– प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक* ***सैंपल मात्र*** *है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 7

क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक

- सावरकर बंधुओं ने 1904 में मित्र मेला एवं 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।
- महाराष्ट्र में पहली क्रांतिकारी घटना 1897 में प्लेग कमिश्नर रैण्ड की गोली मारकर की गयी हत्या थी।
- वस्तुतः चापेकर बंधुओं ने बालकृष्ण एवं दामोदर चापेकर तिलक के पत्र'केसरी' में छपे लेख से प्रेरित होकर यह कार्य किया था।
- बंगाल में 1902 में अनुशीलन समिति की स्थापना हुई जिसमें 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'जतिन नॉथ' की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- बंगाल में 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'उपेन्द्रनाथ दत्त' ने 'युगांतर' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया।
- 1930 में बंगाल में विनय, बादल एवं दिनेश नामक क्रांतिकारियों ने अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी। इसी तरह सूर्यसेन)मास्टर दा (ने चटगांव शस्त्रागार पर नियंत्रण स्थापित किया ।
- भगत सिंह ने 1925 में 'भारत नौजवान सभा' की स्थापना की जिसने भारतीयों को समाजवादी विचारधारा के माध्यम से क्रान्ति की ओर प्रेरित किया।
- पंजाब में क्रांतिकारी विचारधारा के प्रसार में अजीत सिंह की भूमिका महत्वपूर्ण थी। जब अजीत सिंह को पंजाब से निर्वासित किया गया तो वह फ्रांस पहुंचकर क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करने लगे।
- दिल्ली में 1912 में वायसराय लार्ड हार्डिंग के काफिले पर बम फेंका गया। इस घटना में रास बिहारी बोस की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- संयुक्त प्रांत में 9 अगस्त 1925 में लखनऊ के पास काकोरी ट्रेन डकैती की गयी और सरकारी खजाने को लूटा गया। इस काकोरी षड्यंत्र मुकदमें के तहत राम प्रसाद बिस्मिल,

FREE SAMPLE

रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिडी एवं अशफाक उल्ला खां को फांसी दे दी गयी। चन्द्रशेखर आजाद भी इस घटना में, शामिल थे किंतु वे फरार होने में सफल रहे ।

- 1928 में दिल्ली में फिरोजशाह कोटला मैदान में क्रांतिकारियों की बैठक हुई जिसमें भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारी शामिल थे। इस बैठक में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन)HRA) का नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन CHSRAJ कर दिया गया।
- रास बिहारी घोष –उदारवादी
- रास बिहारी बोस- क्रांतिकारी
- स्वदेशी आंदोलन में किसानों की भागीदारी नहीं थी।
- ब्रह्म समाज -1828
- आर्य समाज 1875
- रामकृष्ण मिशन -1897

- **विदेश में प्रसार**
- **लंदन** में 1905 में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने 'इंडिया होमरुल सोसाइटी' की स्थापना की जिसका लक्ष्य भारत के लिए स्वराज की प्राप्ति करना था। इसकी स्थापना ब्रिटिश समाजवादी नेता 'हीडमैन' के सुझाव पर की गई। हैं। इसके उपाध्यक्ष अब्दुल्ला सुहरावर्दी थे।

श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लंदन में 'इंडिया हाउस' की स्थापना की जो क्रांतिकारियों का प्रमुख केन्द्र बना। यह विदेशों में रह रहे भारतीयों को एकजुट कर क्रांतिकारी विचारधारा के प्रसार में अपनी भूमिका निभाता था। सरकारी दमन के कारण श्याम जी कृष्ण वर्मा को लंदन छोड़ना.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम**

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा) के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें**, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE

कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति (1460 ई.) :

- 1460 ई.की यह प्रशस्ति कीर्ति स्तंभ में कई शिलाओं पर उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है / इस प्रशस्ति में मेवाड़ शासक बापा से लेकर कुंभा तक का वंश क्रम तथा उनकी उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति में इसके रचयिता महेश भट्ट का भी उल्लेख है।
- इसमें कुंभा द्वारा गुजरात एवं मालवा की सेना पर विजय के उपलक्ष में विजय स्तंभ का निर्माण करवाने का उल्लेख है।
- इसमें कुंभा द्वारा निर्मित मंदिरों तथा उनके निर्माणों की तिथियाँ अंकित है। कुंभा द्वारा बनवाये गये कुंभश्याम मंदिर की तुलना कैलाश पर्वत तथा सुमेरू पर्वत से की गई है।
- इस प्रशस्ति में कुंभा को दानगुरु, राजगुरु तथा शैलगुरु कहा गया है।
- यह प्रशस्ति 3 दिसम्बर, 1460 को कुंभा के समय उत्कीर्ण की गई।इस प्रशस्ति में कुंभा द्वारा रचित ग्रंथों का उल्लेख किया गया है।

एकलिंगजी मंदिर के दक्षिण द्वार की प्रशस्ति :-

- यह प्रशस्ति महाराणा रायमल द्वारा 1488 ई. में मंदिर के जीर्णोद्धार के समय उत्कीर्ण करवाई गई।

  इस प्रशस्ति में मेवाड़ के शासकों की वंशावली तथा उस समय के समाज के बारे में उल्लेख मिलता है।

  इस प्रशस्ति का रचयिता महेश भट्ट था।

नौलखा बावड़ी की प्रशस्ति (1587 ई.):

1587 ई.की यह प्रशस्ति डूंगरपुर स्थित नौलखा बावड़ी पर उत्कीर्ण है।

इस प्रशस्ति में डूंगरपुर महारावल आसकरण की रानी प्रेमलदेवी द्वारा नौलखा बावड़ी के निर्माण का उल्लेख है

इस प्रशस्ति से वागड़ के चौहान शासकों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

<u>जूनागढ़ प्रशस्ति:</u>

1594 ई. की यह प्रशस्ति संस्कृत भाषा में बीकानेर शासक रायसिंह द्वारा जूनागढ़ किले में उत्कीर्ण करवाई गई।

इस प्रशस्ति में जूनागढ़ दुर्ग के निर्माण की तिथि अंकित है तथा इस दुर्ग का निर्माण मंत्री कर्मचंद्र की देख - रेख में होने का उल्लेख है।

इस प्रशस्ति का रचयिता जैता था।

इस प्रशस्ति में बीकानेर शासक राव बीका से रायसिंह तक की वंशावली एवं उनकीउपलब्धियों का उल्लेख है।

इस प्रशस्ति में रायसिंह को साहित्य एवं काव्य का ज्ञाता, विद्वानों का संरक्षक तथा एक अच्छा कवि बताया गया है।

इस प्रशस्ति को 'राय प्रशस्ति' भी कहा जाता है।

<u>जगन्नाथ राय प्रशस्ति :</u>

1652 ई. की यह प्रशस्ति उदयपुर के जगन्नाथ राय मंदिर में उत्कीर्ण है।

इस प्रशस्ति में इसके रचयिता कृष्णभट्ट का उल्लेख है।

इस प्रशस्ति में मेवाड़ शासक रावल बापा से महाराणा सांगा तक के शासकों की उपलब्धियाँ अंकित है।

इसमें हल्दीघाटी का युद्ध तथा महाराणा जगतसिंह के काल का विस्तृत उल्लेख किया गया है।

यह पंचायतन शैली की.....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट *– प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक* ***सैंपल मात्र*** *है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

मेवाड़ रियासत के प्रमुख शासको का कालक्रम निम्न प्रकार से हैं :–

गुहिल वंश के शासक

गुहिल

राजा गुहिल का जीवन परिचय : -

विजयभूप ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। यहां इनका शासन सदियों तक रहा । विजयभूप की 6वी पीढ़ी में शिलादित्य नामक व्यक्ति वल्लभीनगर का शासक बना । राजस्थान के आबू में उस समय परमार वंश का शासन था जिनकी राजधानी चंद्रावती थी । परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है । पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं लेकिन दोनों को एक पुत्र की चाह थी। अगली बार जब पुष्पावती गर्भवती होती है तो वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास अबुर्दा देवी मंदिर चली जाती है । पुष्पावती के आबू जाने के बाद पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ोसी राज्य ने आक्रमण कर दिया । इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं । शिलादित्य के एक सेवक ने आबू पहुंचकर रानी पुष्पावती को इस बात की सूचना दी । पुष्पावती ने अपने पति शिलादित्य की मृत्यु के दुख में सती होने का फैसला किया लेकिन गर्भावस्था में होने के कारण उनकी सखियों ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। स्थिति ऐसी हो गई थी कि अब वह अपने मायके भी नहीं जा सकती थीं अतः उन्होनें अन्यत्र जाने का फैसला किया । रानी पुष्पावती अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए कुछ दिनों बाद आबू व वल्लभीनगर के मध्य स्थित वीरनगर नामक स्थान पर पहुंची। यहां वह कमलाबाई नामक एक विधवा व निसंतान ब्राह्मणी के घर रहने लगीं । कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गईं। ऐसा माना जाता है कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम गुहिल रख दिया गया । बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।

FREE SAMPLE

बालक गुहिल बचपन से ही होनहार व साहसिक परवर्ती का था । भीलों के साथ उसके अच्छे संबंध थे । वह इन भील बालकों के साथ ही खेलता हुआ बड़ा हो गया । बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने माँ-बाप के बारे में पता चला । गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर पहंचा लेकिन वहां उस समय तक उसके शत्रु का राज्य नष्ट हो चुका था । अतः गुहिल वल्लभीनगर से पुनः वीरनगर लौट आया। वीरनगर आने के बाद गुहिल ने मेवाड़ पर (ईडर के आस - पास का क्षेत्र) आक्रमण करने का निश्चय.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

अल्लट (971-951 ई.) : -

अल्लट 951 ई. में मेवाड़ के शासक बने । आहड़ से प्राप्त शक्तिकुमार का लेख 977 ई. के अनुसार अल्लट की माता महालक्ष्मी का राठौड़ वंश की होना तथा अल्लट की रानी हरियदेवी का हूण राजा की पुत्री होना और उस रानी का हर्षपुर गांव बसाना अंकित है अल्लट ने आहड़ को राजधानी बनाई व यहाँ वराह मन्दिर का निर्माण करवाया । यह लेख टॉड को मिला था । यह अपूर्ण लेख उदयपुर के संग्रहालय में सुरक्षित है ।

अल्लट ने हूण राजकुमारी हरियादेवी से विवाह किया । ये मेवाड़ के पहले शासक थे, जिन्होंने हूण राजकुमारी से विवाह किया ।

राजा अल्लट के समय (वि सं 1010) के शिलालेख से सारणेश्वर के मंदिर का छबना बनाया गया था।

राजा अल्लट के समय का लेख मूल में वराह मंदिर में लगा हुआ है जो मेवाड़ के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

अल्लट ने मेवाड़ में सबसे पहले नौकरशाही का गठन किया।

आहड़ का देवकुलिका का लेख 977 ई. के अनुसार मेवाड़ के राजा अल्लट नरवाहन और शक्तिकुमार के नाम होने से यह शक्तिकुमार के समय का प्रतीत होता है।

इस लेख का सबसे बड़ा उपयोग यह है कि इससे इन तीनों शासकों के समय के अक्षपटलाधीशों का वर्णन मिलता है। अब इस लेख का.....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा

/ यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

महाराणा प्रताप सिंह (1540-1597 ईस्वी.)

जन्म - 9 मई, 1540

जन्मस्थान - कुम्भलगढ़ दुर्ग

पिता – राणा उदय सिंह

माता - महाराणी जयवंता कँवर

विवाह - उन्होनें 11 शादियाँ की थी - महारानी अजब्धे पंवार, अमरबाई राठौर, शहमति बाई हाडा, लखाबाई, जसोबाई चौहान और 6 पत्नियाँ

संतान - अमर सिंह, भगवान दास और 17 पुत्र

प्रारम्भिक जीवन और बचपन : -

प्रताप का जन्म भारतीय तिथि के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल की तृतीय को हुआ था ,इस कारण आज भी प्रतिवर्ष इस दिन महाराणा प्रताप का जन्म दिवस मनाया जाता हैं।

राणा उदय सिंह द्वितीय के 33 पुत्र थे, जिनमें प्रताप सिंह सबसे बड़े पुत्र थे, प्रताप बचपन से ही स्वाभिमानी और देशभक्त थे, साथ ही वो बहादुर और संवेदनशील भी थे। उन्हें खेलों और हथियार के प्रशिक्षण में रुचि थी। वास्तव में प्रताप को मेवाड़ के प्रति अपनी जिम्मेदारी की समझ बहुत जल्द आ गयी थी, इस कारण बहुत कम उम्र में ही उन्होनें हथियार, घुड़सवारी, युद्ध का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। वो सभी राजकुमारों में सबसे ज्यादा प्रतिभावान और बलशाली राजकुमार थे। महाराणा प्रताप जयमल मेड़तिया के शिष्य थे, जो बहुत वीर था, जब बहलोल खान ने जयमल को युद्ध के लिए ललकारा तो उन्होनें खान के घोड़े के साथ उसके दो टुकड़े कर दिए।

1567 में चित्तौड़ को अकबर की मुगल सेना ने चित्तौड़ को सब तरफ से घेर लिया था, ऐसे में मुगलों में हाथों में पड़ने की जगह महाराणा उदय सिंह ने अपने परिवार के साथ गोगुंदा जाने का निश्चय किया, हालांकि उस समय भी राजकुमार प्रताप वहीँ रहकर युद्ध

करना चाहते थे, लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियां होने के कारण उन्हें अपने परिवार के साथ गोगुंदा जाना पड़ा। उदय सिंह और उनके मंत्रियों ने गोगुंदा में ही अस्थायी शासन शुरू किया।

कुंवर प्रताप से महाराणा प्रताप

उदय सिंह ने मरने से पहले अपनी सबसे छोटी रानी के पुत्र जगमल को राजा नियुक्त किया और प्रताप ने सबसे बड़ा और योग्य पुत्र होते हुए भी ये स्वीकार कर लिया, लेकिन मंत्री इस बात से सहमत नहीं हुए क्योंकि जगमल में राजा बनने के गुण नहीं थे। 1572 में उदय सिंह की मृत्यु हो गयी। इसलिए सबने मिलकर ये निर्णय लिया कि सत्ता महाराणा प्रताप को दी जायेगी, महाराणा प्रताप सिंह ने भी उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए गद्दी सम्भाल ली, इस कारण जगमल को क्रोध आ गया और वो अकबर की सेना में शामिल होने के लिए अजमेर के लिए रवाना हो गया और अकबर की मदद के बदले जहाजपुर की जागीर हासिल करना ही उसकी मंशा थी।

महाराणा प्रताप और अकबर : -

महाराणा प्रताप के समय अकबर दिल्ली का शासक था, उसकी रणनीति थी कि वो हिन्दू राजाओं की शक्ति को अपने अधीन करके उन पर शासन करता था। इसी क्रम में युद्ध को नजरअंदाज करते हुए बहुत से राजपूतों ने युद्ध की जगह अपनी बेटियों के डोले अकबर के हरम में भेज दिएँ जिससे कि संधि हो सके, लेकिन मेवाड़ ऐसा राज्य नहीं था, यहाँ अकबर को काफी संघर्ष करना पड़ा। उदयसिंह के समय राजपूतों ने जब चित्तौड़ छोड़ दिया था तो मुगलों ने शहर पर कब्जा कर लिया हालांकि वो पूरे मेवाड़ को हासिल करने में नाकाम रहे और अकबर पूरे हिन्दुस्तान पर शासन करना चाहता था इसलिए पूरा मेवाड़ उसका लक्ष्य था। केवल 1573 में ही अकबर ने 6 बार द्विअर्थी प्रस्ताव भेजे लेकिन प्रताप ने सबको अस्वीकार कर दिया, अकबर के पांच बार संधि वार्ता भेजने के बाद प्रताप

ने अपने बेटे अमर सिंह को अकबर के दरबार में संधि अस्वीकार करने के लिए भेजा, इसके बाद.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

अध्याय – 10

राजस्थान में 1857 की क्रांति

कर्नल जेम्स टॉड पहला व्यक्ति था जिसने राजस्थान का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित इतिहास लिखा इसीलिए कर्नल जेम्स टॉड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा जाता है

इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की गलतियों को दूर किया इसीलिए गौरीशंकर हीराचंद ओझा को राजस्थान के इतिहास का वैज्ञानिक पिता कहा जाता है।

घोड़े वाले बाबा उपनाम से इतिहास में प्रसिद्ध कर्नल जेम्स टॉड के गुरु ज्ञानचंद थेकर्नल जेम्स टॉड ने पृथ्वीराज रासो के लगभग 30000 हजार दोहो, का अंग्रेजी में अनुवाद किया था

ब्रिटिश सरकार ने कर्नल जेम्स टॉड को 1818 से 1822 के मध्य पश्चिमी राजपूत राज्यों का पोलिटिकल एजेंट नियुक्त किया जिसमें 6 रियासतें शामिल थी :-

1 - कोटा

2 - बूंदी

3 - जोधपुर

4 - उदयपुर

5 - सिरोही

6 - जैसलमेर

1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत (Different views in reference to the revolt of 1857)

FREE SAMPLE

- डॉ रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था।
- डॉ रामविलास शर्मा– यह जनक्रांति थी।
- डिजरायली बेंजामिन डिजरैली– यह राष्ट्रीय विद्रोह था।
- वी डी सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई. थी । (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस)
- एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था।
- सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन्, ट्रैविलियन,सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंदोपाध्याय सैयद अहमद खां भी सहमत)।
- जवाहरलाल नेहरु- यह विद्रोह मुख्यतः सामंतशाही विद्रोह था।
- सर जेम्स आउट्रम और डब्लयू टेलर- यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था।
- क्रान्ति के प्रमुख कारण (Reason of 1857 Revolution)।
- देशी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
- लार्ड डलहौजी की राज्य विलय की नितिया।
- चर्बी लगे कारतुस का प्रयोग (एनफील्ड)
- 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किंतु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी।
- 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस माने जाते हैं, जिनका प्रयोग एनफील्ड राइफल में किया जाता था 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रांत के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसका मुख्यालय आगरा में था इस प्रांत का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलविन था।
- अजमेर- मेरवाड़ा का प्रशासन कर्नल डिक्सन के हाथों में था क्रांति के समय राजपुताना का ए.जी.जी जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस था जिस का मुख्यालय माउंट आबू में स्थित था अजमेर राजपूताना की प्रशासनिक राजधानी था और अजमेर में ही अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार स्थित था।

FREE SAMPLE

- अजमेर की रक्षा की जिम्मेदारी 15नेटिव इन्फैंट्री बटालियन के स्थान पर ब्यावर से बुलाई गई, लेफ्टिनेंट कारनेल के नेतृत्व वाली रेजिमेंट को दे दी गई मेरठ विद्रोह की खबर 19 मई 1857 को माउंट आबू पहुंची इस क्रांति का प्रतीक चिह्न रोटी और कमल का फूल था।

राजस्थान में क्रांति के समय पॉलिटिकल एजेंट (Rajasthan Political agent in evolution)

1. कोटा रियासत में-मेजर बर्टन
2. जोधपुर रियासत में-मेक मैसन
3. भरतपुर रियासत में- मोरिशन
4. जयपुर रियासत में - ईडन
5. उदयपुर रियासत में-शावर्स और
6. सिरोही रियासत में-जे.डी.हॉल थे

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (cut off- 64)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (Ist शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (Ist शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 Ist शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (Ist शिफ्ट)	89 (160 में से)

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE

- **राजनैतिक जाग्रति**

राजस्थान में राजनैतिक जागृति – 1857 ई. में कंपनी की सत्ता के विरुद्ध भारतव्यापी क्रांति का शंखनाद हुआ। भारतव्यापी इस क्रांति से राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि कैसे अछूती रह सकती थी? अतः 1857 ई. में राजस्थान में भी इस क्रांति का विस्फोट हुआ, जिसे आधुनिक इतिहासकारों ने प्रथम स्वाधीनता संग्राम की संज्ञा दी है।

राजस्थान में यह क्रांति इतिहास की एक युगांतकारी घटना प्रमाणित हुई। यद्यपि राजस्थानी राज्यों में ब्रिटिश अधिकारियों के अनाधिकार हस्तक्षेप के कारण राजस्थानी नरेशों में भी अंग्रेजों के प्रति रोष था, लेकिन राजस्थानी नरेशों को ब्रिटिश सरकार द्वारा सुरक्षा का आश्वासन मिल जाने के कारण, वे ब्रिटिश सत्ता के प्रति निष्ठावान बने रहे तथा क्रांति का दमन करने में वे अंग्रेजों से सहयोग करते रहे। इस प्रकार राजस्थानी नरेश इस क्रांति की आँधी को रोकने के लिये बलवर्द्धक प्रमाणित हुए।

ब्रिटिश सैन्य शक्ति तथा राजस्थानी नरेशों के अपूर्व सहयोग से, इस क्रांति को पूरी तरह कुचल दिया गया था, तथापि ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध आक्रोश तथा ब्रिटिश आधिपत्य का अंत कर देश को स्वतंत्र कराने की जनभावना को नहीं कुचला जा सका था। वस्तुतः यह क्रांति स्वाधीनता सेनानियों के लिये प्रेरणा-स्रोत साबित हुई और इस क्रांति ने भावी राष्ट्रीय आंदोलन का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

निर्भीक धर्म-प्रचारकों एवं उग्र राष्ट्रवादी विचारों वाले नेताओं ने ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्त होने की भावना की उस मंद चिन्गारी को बुझने नहीं दिया, बल्कि वे लोगों में ब्रिटिश विरोधी भावना का प्रचार कर उनमें राजनैतिक चेतना जागृत करते रहे।

भारत के कुछ बुद्धजीवियों ने ब्रिटिश भारत के लोगों को नागरिक अधिकार दिलाने व भारतीयों को प्रशासन से संबद्ध करने हेतु 1885 ई. में अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना की, जिससे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का एक नया अध्याय आरंभ हुआ।

अखिल भारतीय कांग्रेस की गतिविधियों का प्रभाव देशी रियासतों पर भी पड़ा और धीरे-धीरे देशी रियासतों में भी स्वाधीनता प्राप्ति की भावना फैलने लगी।

FREE SAMPLE

इस प्रकार 19 वीं शताब्दी के अंत में तथा 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में नवयुवकों ने 1857 ई. की बुझी हुई मशाल (क्रांति) को पुनः प्रज्ज्वलित किया, जिसका अंतिम परिणाम देश की स्वाधीनता के रूप में प्रकट हुआ।

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध व 20 वीं शताब्दी के दो दशकों के बीच राजस्थान में कुछ ऐसी घटनाएँ घटित हुई, जिससे राजस्थान में राजनैतिक जागृति फैल गई, जिसके फलस्वरूप 20 वीं शताब्दी के तीसरे और चौथे दशक में राजस्थान भी राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा से जुड़ गया।

राजनैतिक जागृति के लिये उत्तरदायी कारण

राजस्थान की देशी रियासतों का राजनैतिक ढाँचा उस समय अनुकूल नहीं था। 1857 ई. की क्रांति के बाद राजस्थान के राजनीतिक क्षितिज पर ब्रिटिश साम्राज्य रूपी सूर्य अपनी प्रखर किरणों के साथ देदीप्यमान होने लगा।

राजस्थान में पराधीनता और राजनैतिक विवशता का घना कुहरा सर्वत्र छाया.....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

राजस्थान की संस्कृति

अध्याय – I

बोलियाँ एवं साहित्य

राजस्थानी भाषा-

- वक्ताओं की दृष्टि से भारतीय भाषाओं में राजस्थानी भाषा का 7 वाँ स्थान तथा विश्व की भाषाओं में राजस्थानी भाषा का 16वाँ स्थान है।
- उद्योतन सुरी ने 8वीं शताब्दी में अपने ग्रंथ कुवलयमाला में 18 देशी भाषाओं में मरु भाषा को भी सम्मिलित किया था।

उद्भव-

- राजस्थानी भाषा का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ हैं। अर्थात् राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से मानी जाती है।
- डॉ. एल.पी. टेस्सीटोरी राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) शौरसेनी अपभ्रंश से मानते हैं।
- डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन एवं डॉ. पुरुषोत्तम मोनारिया राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) नागर अपभ्रंश से मानते हैं।
- के.एम. मुंशी एवं मोतीलाल मेनारिया राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से मानते हैं।
- अधिकांश विद्वान राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से मानते है।

उत्पत्ति काल-

- राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति काल 12 वीं सदी का अन्तीम चरण माना जाता है।

FREE SAMPLE

स्वतंत्र अस्तीत्व-

- 16वीं सदी के बाद राजस्थानी भाषा अपने स्वतंत्र अस्तीत्व में आने लगी थी अर्थात् 16वीं सदी के बाद राजस्थानी भाषा का विकास एक स्वतंत्र भाषा के रूप में होने लगा था।
- राजस्थानी एवं गुजराती भाषा का मिला जुला रूप 16 वीं सदी के अंत तक चलता रहा है।

जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन-

- राजस्थानी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1912 में जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपने ग्रंथ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया में किया था ।
- राजस्थानी भाषा या राजस्थानी बोलियों का पहली बार वैज्ञानिक अध्ययन जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने किया था।

<u>राजस्थानी भाषा का वर्गीकरण-</u>

I. सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन का वर्गीकरण-

सरजॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपनी पुस्तक या ग्रंथ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया के 9वें खण्ड में सन् 1912 में राजस्थानी भाषा का स्वतंत्र भाषा के रूप में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने वाले.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी

ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा) *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/*

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख बोलियां-

मारवाड़ी बोली-

- मारवाड़ी बोली का प्राचीन नाम मरुभाषा है ।
- मारवाड़ी बोली के साहित्यिक रूप को डिंगल कहते हैं।
- मारवाड़ी बोली का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से हुआ है ।
- मारवाड़ी बोली का उत्पत्ति काल 8 वीं सदी है।
- मारवाड़ी बोली पर सर्वाधिक प्रभाव गुजराती भाषा का रहा है ।
- मारवाड़ी बोली राजस्थान की प्राचीनतम बोली मानी जाती है ।
- मारवाड़ी बोली पश्चिमी राजस्थान की प्रधान या प्रमुख बोली है।
- मारवाड़ी बोली राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्रों में बाले जाने वाली बोली है ।
- जैन साहित्य एवं मीरा की अधिकांश रचना यें मारवाड़ी में है ।
- राजियारा सोरठा, वेलि क्रिसन् रुकमणी री, ढोला-मरवण, मूमल आदि लोकप्रिय काव्य मारवाड़ी भाषा में ही रचित है।
- विशुद्ध मारवाड़ी (पुरी शुद्ध मारवाड़ी) बोली राजस्थान में जैसलमेर, बीकानेर, पाली, नागौर, जालौर, सिरोही, शेखावाटी, जोधपुर , व जोधपुर के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है।
- मारवाड़ी की उपबोलियां-

1. गौड़वाड़ी
2. देवड़ावाटी
3. थली
4. शेखावटी

गौड़वाड़ी-

- गौड़वाड़ी बोली राजस्थान में पाली एवं जालौर जिलें के उत्तरी भाग में बोली जाती है ।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

देवड़ावाटी-

- देवड़ावाटी बोली राजस्थान में सिरोही जिलें में बोली जाती हैं ।

थली-

- थली बोली राजस्थान में बाड़मेर व जैसलमेर जिलों में बोली जाती हैं ।

शेखावाटी-

- शेखावाटी बोली राजस्थान में झुंझुनू, सीकर तथा चूरू जिलों में बोली जाती हैं।

मेवाड़ी-

- मेवाड़ी बोली राजस्थान में भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद उदयपुर एवं उदयपुर के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती हैं।
- मेवाड़ी, मारवाड़ी के बाद दूसरी महत्वपूर्ण बोली हैं।
- महाराणा कुंभा द्वारा रचित नाटकों में मेवाड़ी बोली का ही प्रयोग हैं।
- मेवाड़ी भाषा के विकसित रूप 12-13वीं शताब्दी में देखने को मिलते हैं।

बागड़ी-

बागड़ी बोली राजस्थान में डूंगरपुर व बांसवाड़ा व दक्षिणी-पश्चिमी उदयपुर के.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

अध्याय – 6

राजस्थान के कवि

मुंशी देवी प्रसाद

इनका जन्म जयपुर में हुआ था। मुंशी देवी प्रसाद को आधुनिक इतिहास के उन्नायक मारवाड़ के कानून निर्माता के रूप में जाना जाता है। इन्होंने जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह के यहां मुंशी के रूप में कार्य किया था।

रचना

ग्रन्थ - भारमल, रूठी रानी, महिला मृदुवानी, कवि रत्नमाला, मारवाड़ की कृष्णा कुमारी बाई,

कोहिनूर - समाचार पत्र अजमेर से प्रकाशित करवाया

SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

पृथ्वीराज राठौड़

पृथ्वीराज राठौड़ का जन्म 1548 में बीकानेर ने हुआ था। इन्हे पीथल नाम से भी जाना जाता है।

अकबर ने इनको गागरोन का किला जागीर में दिया था।

इनकी प्रसिद्ध रचना **वेलि कृष्णन रुक्मणि री** है यह राजस्थानी भाषा का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है। टेसिटोरी ने इसको **डिंगल का हेरोस** कहा। दूरसा आढा ने वेली कृष्णन रुक्मणि को पांचवा वेद कहा।

अन्य रचना

ठाकुर जी रा दूहा, गंगा जी रा दूहा, गंगा लहरी

कन्हैयालाल सेठिया

कन्हैया लाल सेठिया राजस्थान भाषा आधुनिक कवियों की श्रेणी में आते हैं। कन्हैया लाल सेठिया का जन्म चूरू जिले के सुजानगढ़ कस्बे में हुआ था। वे डिंगल भाषा के कवि थे। इनका जन्म 1919 ई. में हुआ था। इनकी कविता पाथल और.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय (TOPIC) अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक **सैंपल मात्र** है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **ग्राम विकास अधिकारी (VDO) (मुख्य परीक्षा)** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद/

FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (cut off- 64)

SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 9694804063, 8504091672

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

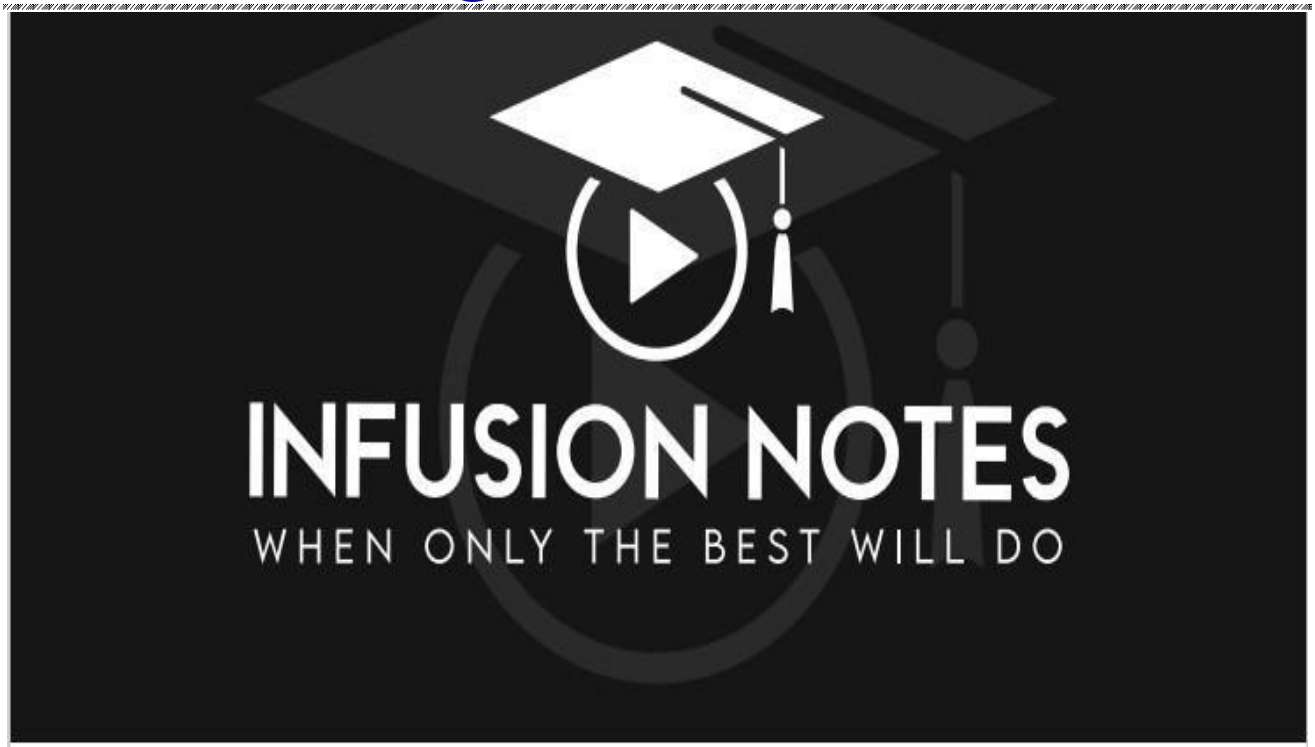

AVAILABLE ON/

01414045784

contact@infusionnotes.com

http://www.infusionnotes.com/